Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor: 4.081
Volume-12, Issue-3, December-2018 www.researchguru.net

अरबेला का संग्राम

BATTLE OF ARBELA

डॉ. दिव्या ए. पटेल, अध्यापक सहायक, डिफ़ेन्स स्ट्डीज (इतिहास) आर्ट्स कॉलेज, वडाली, जि - साबरकांठा

सार :

अरबेला का युध्ध यूनानी सम्राट सिकन्दर महान और फारसी (ईरानी) सम्राट डेरियस के मध्य 1 अक्टूबर 331 ईसा पूर्व में सम्पन्न हुआ । इस युध्ध का घटनाक्रम तब प्रारम्भ होता है जब अनेक संग्रामों में विजय का आलिंगन करते हुए सिकन्दर महान ईरान के हृदय स्थल की ओर बढ़ा और 'नाइनवेह' के खंडरों के समीप आ पहुँचा तो उसके स्वयंसेवकों ने उसे यह सूचना दी कि समीप में ही कुछ फारसी अश्वारोही अपना जमघट लगाये हुए हैं । इनमें से कुछ को सिकन्दर ने कैद कर लिया, जिनसे उसे यह ज्ञात हुआ कि अरबेला के पास डेरियस अपना फौजी केम्प डालकर वहाँ के ऊबड़-खाबड़ भू-तल को समतल बनाने में रत हैं । इधर डेरियस ने सिकन्दर के बढ़ने की सूचना मिलते ही अपनी सेना को युध्ध स्थिति में आने का आदेश दे दिया । इस संग्राम में ईरानी सेना में वेतनभोगी सैनिक अपेक्षाकृत पहले से कम थे क्योंकि उनमें से अधिकांश युध्ध में मार डाले गए थे तथा इनके स्थान पर इरानियों को भर्ती कर लिया गया था ।[1]

सिकन्दर की विश्व विजय बनने की महेच्छा :

जिस समय यूनानी सम्राट सिकन्दर सिंहासनारूढ़ हुआ था, उसके चारों ओर अनेक समस्याएँ मुंह खोले हुए खड़ी थी; परंतु उसने बड़ी कुशलता एवं धैर्य के साथ इन समस्याओं को हल किया । सबसे पहले उसने थिसली पर धावा किया और बिना रक्तपात के ही विजय हासिल कर ली । इसके फलस्वरूप उसे थिसली की लीग का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया । इस प्रकार उसने अपने साम्राज्य-विस्तार का श्रीगणेश कर दिया । ग्रीस को अपने अधीन करके उसने उत्तरी तथा पश्चिमी सीमांत क्षेत्र की जंगली जातियों को भी अपने अधीन कर लिया । वहाँ जब उसने यह सुना कि थीब्स में विद्रोह हो गया हें, तो वह गिजली की तेजी से वापस लौटा और थीब्स को पूर्णतया नष्ट कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप एथेंस के लोग भी भयभीत हो गए और उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया ।

इस प्रकार ग्रीस को एकसूत्र में बांधकर सिकन्दर विश्व-विजय के लिए निकला । उसने कहा, "मैं उन ग्रीक बस्तियों को स्वतंत्र करने जाता हूँ, जिन्हें ईरान के राजा ने जीत लिया है ।" किंतु उसका भीतरी उददेश्य दूसरा था । उस समय ईरान का राज्य पूर्व की ओर भारतवर्ष से लेकर पश्चिम में मिस्र तक फैला हुआ था । यह सारा राज्य जीतकर अपने अधिकार में करना, सिकन्दर की चढ़ाई का मुख्य उददेश था । ईरान के इस राज्य में सूझा,

पर्सपोलिस, एक्बाटना, डमास्कस, बेबिलोन आदि अनेक प्रसिध्ध शहर थे । उस समय ईरान की गद्दी पर डेरियस तृतीय आसीन था ।

अभियान के आरंभ में उसे अनेक लड़ाइयों में महत्वपूर्ण सफलता मिली, जिसके कारण साम्राज्य-विस्तार की इच्छा निरंतर बढ़ती गई । सिकन्दर ने ईरान के समुद्री सतावाले नगरों पर अधिकार करने का निश्चय किया और 333 ई.पू. में प्रमुख बन्दरगाहों पर कब्जा कर लिया । इसी बीच डेरियस तृतीय सिकन्दर का सामना करने के लिए इसस नदी तट पर पहुंचा, परंतु इस आक्रमण में डेरियस पराजित होकर भाग गया । इसके बाद सिकन्दर ने शेष सभी अडड़ों पर अधिकार कर लिया तथा साइप्रस भी उसके अधिकार में आ गया । इस प्रकार उसने पूर्वी भूमध्यसागर पर अधिकार जमा लिया ।

इसके पश्चात सिकंदर पैलिसटाइन होता हुआ गाजा पहुंचा तथा उस पर विजय प्राप्त करके उसने ईरान से मिस्र के रास्ते को बंध कर दिया । मिस्र के शासन का प्रबंध करके वह टायर पहुंचा । सिकंदर की बढ़ती विजय-यात्रा को देखकर डेरियस ने दो बार उससे संधि के लिए प्रार्थना की; पर उसने अस्वीकार कर दिया । वह अगले युध्ध की तैयारी में लगा रहा । अंत में मेनफीस तथा पेल्यूजियम नामक स्थानों पर अपना सैनिक पड़ाव डालकर वह एशिया की ओर बढ़ा ।[2]

सिकंदर की सैन्य-शक्ति :

सिकंदर की सेना इस प्रकार से संगठित थी कि उसमें युध्ध के समरतांत्रिक उददेश्य को प्राप्त करने की पूरी क्षमता थी । उसके कंपेनियन अश्वारोही सैनिकों के पास तलवारें व भाले रहते थे तथा वे शिरस्त्राण और कवच भी धारण करते थे । उन्हें लगभग 1,500 के रेजीमेंट्स में विभक्त किया गया था । पैदल सेना में सैनिको के पास 14 फीट लंबा 'सरिसा' (भाला), हलका कवच एवं ढाल होती थी। पैदल सेना भी लगभग 1,500 की टुकड़ियों में बटी हुई थी । इनकी सबसे छोटी इकाई 'फाइल' कहलाती थी, जिसकी संख्या सिकंदर ने 16 सैनिकों के स्थान पर 8 सैनिकों की कर दी थी । इसके साथ ही कंपेनियन और फ़ैलेंक्स के बीच में होप्सलाइट थे, जो हल्की पैदल सेना के स्थान पर थे । इन तीनों सेनाओं को इस प्रकार से व्यूहबध्ध किया जाता था कि वह शत्रु के ऊपर एक तिरछी दीवार की भाँति आक्रमण करके उसके पार्श्व को ध्वस्त कर सके । तेज अश्वारोही और मंद पैदल सैनिकों के मध्य हलकी पैदल सेना थी, जो दोनों को जोड़कर रखती थी । घेराबंदी के लिए कैटापुल्ट तथा वेलैस्टे नामक युध्ध-यंत्र भी थे । सिकंदर ने आवश्यक इंजीनियरिंग व साज-सज्जा का भी संगठन किया था । उसकी दोनों सेनाओं की संख्या इस प्रकार थी-

पैदल सेना - 40,000

अश्वारोही सेना - 7,000 ।

डेरियस की सैन्य-शक्ति :

ईरानी शासक डेरियस तृतीय के पास 1,00,000 पैदल सैनिक, 40,000 अश्वारोही सैनिक तथा छुरों से युक्त 200 रथ संगठित थे । इस सेना को डेरियस ने गोगामेला के पड़ाव पर उसी मैदान को समतल बनाया; ताकि रथों का समुचित प्रयोग किया जा सके । डेरियस की सेना में लगभग 25 हाथी भी थे । डेरियस ने अपनी विशाल सैन्य-शक्ति के आधार पर सिकंदर की सेना को घेरने की गूढ़ योजना बनाई । इसी उददेश्य की पूर्ति के लिए उसने सबसे आगे रथ सेना को संगठित किया तथा उनके मध्य भाग में हाथी खड़े किए, ताकि जोरदार आक्रमण करके शत्रु की सेना में भय का वातावरण बनाया जा सके । रथ सेना के पीछे अश्वारोही सेना का गठन किया । डेरियस ने अग्र एवं मध्य भाग की सेना को तीन भागों में विभक्त किया था-

दाहिना भाग- सेनापति मेजियस के नेतृत्व में,

मध्य भाग- स्वयं डेरियस के नेतृत्व में,

बायाँ भाग- सेनापति बेसुस के नेतृत्व में ।

इस प्रकार डेरियस ने अपनी सैन्य-शक्ति को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए सैनिकों को तलवार तथा लंबे भाले दिए । उसके अश्वारोही भाले व तलवारों के साथ ढाल भी रखते थे ।

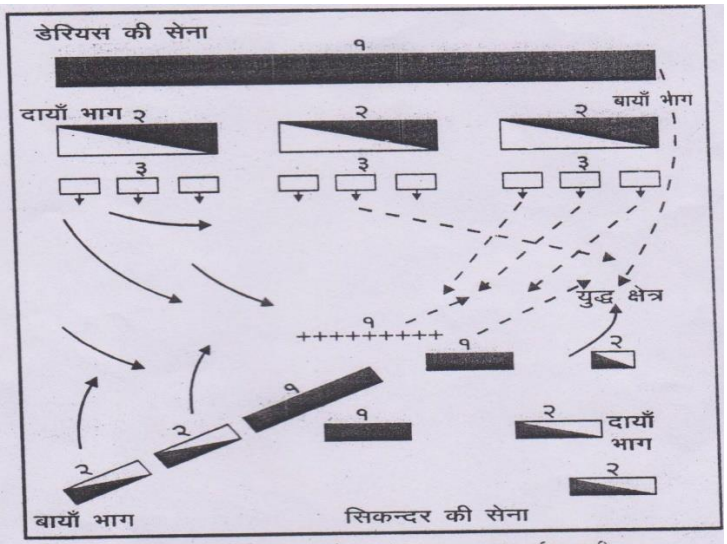

चित्र 1: अरबेला का संग्राम (1 अक्टूबर 331 ईसा पूर्व)

१) पैदल सेना २) अश्वारोही सेना ३) हाथी एवं रथ [3]

अरबेला से लगभग 70 मील पश्चिम में प्राचीन निनवेह के निकट गोगामेला के मैदान में डेरियस की सेना को जब सिकंदर के जासूसों ने व्यूहबध्ध होते देखा तो इसकी जानकारी सिकंदर को दी, जिससे सिकंदर सजाग हो गया और अपनी सैन्य प्रतिभा के बल पर समस्त क्षेत्र का निरीक्षण एवं विश्लेषण करके अपने सेनापतियों से परामर्श किया । शत्रु को आश्चर्यचकित करने के उददेश्य से कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए जा सके ।[4]

वास्तविक संघर्ष :

30 सितंबर, 331 ई. पू. जब ईरानी सेना रात्रिकालीन उत्सव में व्यस्त थी, सिकंदर की सेना आराम कर रही थी । डेरियस ने अपनी सेना को संग्राम के एक दिन पूर्व ही व्यूहबध्ध कर लिया था । जब 1 अक्टूबर, 331 ई. पू. को सिकंदर ने यह देखा कि ईरानी सेना की अगली पंक्ति उसकी पंक्ति से दोगुनी लंबी है और शत्रु उसको दोनों ओर से घेर शकता है । अत: अपनी व्यूह-रचना कराते समय सिकंदर ने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि उसके पार्श्वो पर शत्रु आक्रमण न कर सके । अत: सिकंदर ने अपनी सेना को कुछ तिरछे होकर बढ़ने का आदेश दिया ।

सिकंदर ने सेना की व्यूह-रचना इस प्रकार की थी कि वह बदलती हुई परिस्थितियों में तुरंत परिवर्तन कर सके । उसके दाहिने पार्श्व में कंपेनियन अश्वारोही तथा तीन टैक्सिस पैदल सेना थी । अश्वारोही सेना का नियंत्रण फिलोटस द्वारा किया जा रहा था । बाएँ पार्श्व की अश्वारोही तथा पैदल सेना का नियंत्रण सेनापति पारमिनीवो के द्वारा किया जा रहा था । इस पंक्ति के पीछे सिकंदरने दोनों पार्श्वों दोहरी पंक्ति लगा राखी थी । दाहिने पार्श्व में पीछे की ओर कोण बनाती हुई हलकी पैदल सेना थी तथा उसके आगे अश्वारोही सेना के तीन स्क्वैडर्न थे । इसी प्रकार बाईं ओर पीछे की तरफ कोण बनाती हुए एक पैदल सेना की टुकड़ी तथा दो अश्वारोही सेना के स्क्वैडर्न थे । उनके आगे पैदल सेना की एक और टुकड़ी थी, जिसे यह आदेश दिया गया था कि वह पार्श्व में घूमकर आक्रमण का सामना कुछ इस तरह करे मानो वह स्वयं आक्रमणकारी है । हलकी धनुर्धारी सेना आगे थी, जिससे ईरानी रथों का सामना किया जा सके । इस प्रकार सिकंदर की व्यूह-रचना सभी ओर से सुरक्षित थी, ताकि डेरियस की योजना को विफल किया जा सके । सिकंदर के 40,000 पैदल तथा 7,000 अश्वारोही सैनिक बड़े ही व्यवस्थित रूप में नियोजित किए गए थे ।

डेरियस की सेना की व्यूह-रचना इस प्रकार की गई थी कि पहली पंक्ति में अश्वारोही सेना संगठित थी जिसके मध्य भाग का नियंत्रण स्वयं डेरियस कर रहा था । अश्वारोही सेना के आगे बाएँ पार्श्व में 100 रथ, मध्य में 50 रथ तथा दाहिने पार्श्व में 50 रथ तैनात थे । इन रथों में तेज छुरे लगे हुए थे । शाही अश्वारोही स्क्वैडर्न के आगे 25 हाथियों को लगाया गया था । दूसरी पंक्ति में पैदल सेना को संगठित किया गया था ।

जब सिकंदर की सेना ने इरानीयों की सेना की ओर मार्च प्रारंभ किया तो सीधे आक्रमण न करके इरानियों के बाएँ पार्श्व में पीछे की तरफ मार्च किया । यह देखकर डेरियस की सेना ने उसके समानांतर चलना आरंभ कर दिया । डेरियस ने अपनी साइथियन अश्वारोही सेना को आगे बढ़कर आक्रमण करने का आदेश दिया । इसके विरूध्ध सिकंदर की मेनीडास के नेतृत्ववाली अश्वारोही सेना ने आगे बढ़ना आरंभ रखा । जब डेरियस ने देखा कि शत्रु की सेना समतल किए हुए क्षेत्र से आगे बढ़ रही है तो डेरियस ने इस डर से कि उसके रथ बेकार हो जाएँगे, अपनी सेना के बाईं ओरवाली अश्वारोही सेना को आगे बढ़ाकर सिकंदर की सेना

को रोकने का प्रयास किया । फलत: सिकंदर की मेनीडास के नेतृत्ववाली अश्वारोही सेना को भ्रम के कारण पीछे हटाना पड़ा तो सिकंदर ने अरिस्टो के नेतृत्ववाली अश्वारोही सेना को आगे बढ़ाने का आदेश दिया, जिसके जवाब में ईरानी कमांडर बेसुस ने बैक्ट्रियन तथा साइथियन अशावरोही सेना को आगे बढ़ाने का आदेश दिया । इस अश्वारोही सेना की मुठभेड़ में सिकंदर की अश्वारोही सेना को भारी हानी उठानी पड़ी, क्योंकि साइथियन अश्वारोही सैनिक कवचयुक्त थे । इस अव्यवस्था के बावजूद सिकंदर की सेना की बहादुरी तथा अनुशासन ने अपना प्रभाव बनाए रखा, जिसके परिणामस्वरूप ईरानी सेना को पीछे हटाना पड़ा ।

उधर डेरियस ने सिकंदर की अश्वारोही सेना की अव्यवस्था का लाभ उठाने के लिए अपने रथों को उसके फैलेंक्स पर आक्रमण करने का आदेश दिया । जैसे ही रथ आगे बढ़े, सिकंदर की हलकी धनुर्धारी एवं भालाधारी पैदल सेना ने अपने तीव्र प्रहारों से उनका डटकर मुक़ाबला किया । इस प्रकार युध्ध का एक चरण समाप्त हो गया ।

युध्ध के द्रीतीय चरण में सिकंदर ने अपनी सेना के पीछे के ओर पहुँच जानेवाले शत्रुओं पर प्रहार करने का आदेश दिया । सिकंदर ने चारों ओर घूमकर अपने नेतृत्व में अश्वारोही एवं पैदल सेना के साथ इरानियों की अश्वारोही एवं पैदल सेना के मध्य दूरी देखकर डेरियस पर तेजी से हमला बोल दिया । सिकंदर की अश्वारोही सेना के साथ पैदल सैनिकों के चमकते हुए भालों को देखकर डेरियस इतना भयभीत हो गया कि युध्ध क्षेत्र से भाग खड़ा हुआ । डेरियस की हाथी सेना ने पीछे मुड़कर स्वयं अपनी सेना को कुचलकर तितर-बितर कर दिया था ।

इस तरह ईरानी सैनिक बड़ी बहादुरी से लड़े; परंतु उन्हें बुरी तरह पराजित होना पड़ा । अपनी सेना जब सुरक्षित हो गई है, वह पता चलते ही सिकंदर ने पुनः शत्रु का पीछा किया । 35 मील पीछा करने के बाद भी डेरियस को पकड़ा नहीं जा सका ।

इस प्रकार 331 ई. पू. लड़े गए इस युध्ध की समाप्ति हो गई । इस युध्ध में सिकंदर ने अपने कुशल नेतृत्व एवं सेना के समरतांत्रिक फैलाव के बल पर महत्वपूर्ण एवं एतिहासिक सफलता प्राप्त की ।[5]

युध्ध का परिणाम :

युध्ध में सफलता के पश्चात सिकंदर ने बहुत दूर तक पीछा करके डेरियस को पकड़ने का प्रयत्न किया, परंतु सिकंदर के हाथ लगाने के पहले इराने सेनापति बेसुस ने ही डेरियस की हत्या कर दी । अब ईरान भी सिकंदर के आधिपत्य में आ गया । सिकंदर काबुल होता हुआ झेलम पहुंचा और पोरस को 326 ई.पू. झेलम के युध्ध में पराजित किया । सिकंदर का विचार गंगा नदी के किनारे चलकर पूर्वी समुद्र तक अधिकार जमाने का था; पर उसके सैनिकों को घर छोड़े हुए बहुत दिन हो चुके थे । अतः उन्होंने आगे बढ़ने से इनकार

कर दिया, जिससे आगे बढ़ने का विचार छोड़कर सिकंदर सिंधु नदी की ओर लौट आया । मार्ग में सिंधु प्रांत के लोगों से उसके अनेक संग्राम हुए ।[6]

13 जून, 323 ई.पू. सिकंदर के इतिहास का अंतिम दिन प्रमाणित हुआ । उस समय उसकी अवस्था 33 वर्ष की ही थी । उसका सारा जीवन युध्ध और राजी-विस्तार बढ़ाने में व्यतीत हुआ; परंतु सिकंदर के हाथ से तलवार म्यान में जाते ही उसका वैभव क्षण-भर में लुप्त हो गया । उसकी मृत्यु के पश्चात उसका साम्राज्य मिस्र, मैसेडोनिया तथा एशिया में विभक्त हो गया था ।[7]

पादटीप :

1. सिंह, लल्लन जी, "युध्ध कला" प्रकाश बुक डिपो, बरेली, प्रथम संस्करण, २००१. पृ - ९९, १०१.
2. मिश्र सुरेन्द्र कुमार, "संसार के प्रसिध्ध युध्ध" ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, १९९९. पृ - २३, २६, २९.
3. सिंह, लल्लन जी, "युध्ध कला" पादटीप 1. पृ - १०१.
4. शुभम, "विश्व प्रसिध्ध युध्ध" चर्खेवालान, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९९९. पृ - ११.
5. मिश्र सुरेन्द्र कुमार, "संसार के प्रसिध्ध युध्ध" पादटीप 2. पृ - २९
6. नागोरी एस. एल. और नागोरी जीतेश, "विश्व के एतिहासिक युध्ध" इना श्री पब्लिशर्स, जयपुर, १९९७. पृ - ४.
7. चक्रवर्ती तापोश, "नव जनवाचन आंदोलन" भारत ज्ञान विज्ञान समिति, गुड़गांव, दिल्ली, प्रथम संस्करण, २००७.